European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

भारतीय संस्कृति पर भूमंडलीकरण के प्रभाव

Bharat Maurya
Assistant Professor in Political Science
Choudhary Bansi Lal Unoversity, Bhiwani (HR)
Email: bharatmaurya010178@gmail.com

भोध सार :

भूमंडलीकरण ने समूचे वि व के समक्ष अनेक चुनौतियाँ खड़ी की हैं, वास्तव में इसका संबंध अर्थतंत्र से है इस आर्थिक संबंध के कारण ही पूरा वि व एक बाजार बन चुका है। 1990 के द ाक में भारत में वै वीकरण को अपनाया गया जिसका भारतीय संस्कृति पर प्रभाव देखा गया यह प्रभाव सकारात्मक भी है तथा नकारात्मक भी। सकारात्मक प्रभाव के अंतर्गत हमें देखने को मिलता है कि किस तरह दे ाों के मध्य संपर्क बढ़ा है तथा इसके अंतर्गत सकारात्मक विचारों को अपनाया गया, व्यक्तिगत अधिकारों को बढ़ावा मिला, दे ा को तरक्की के नए माध्यम मिले तथा वहीं दूसरी तरफ नकारात्मक रूप में इस वै वीकरण ने भारतीय संस्कृति पर अपना प्रभाव डाला जिससे यहाँ की संस्कृति में परिवर्तन देखने को मिला जैसे कि – खान–पान में बदलाव आया, पहनावे में परिवर्तन तथा व्यक्तियों में धीरे–धीरे एकता, दे ा के प्रति सम्मान, राश्ट्रभक्ति की भावना विलुप्त होती गई अब इनके स्थान पर पा चात्य संस्कृति की भौली को अपनाया जा रहा है वहाँ के रहन–सहन, खान–पान तथा विचारों को महत्ता दी जाने लगी जिससे भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा।

मुख्य भाब्द : भूमंडलीकरण, संस्कृति, उदारवाद, निजीकरण।

भोध पद्धति : ऐतिहासिक विधि, अवलोकन पद्धति, वर्णात्मक

- **वै वीकरण का अर्थ :**

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

वै वीकरण के अंतर्गत ज्ञान, वस्तुओं तथा तकनीकी इत्यादि का अंतराश्ट्रीय व्यापार, निवे ा, सूचना प्रौद्योगिकी और संस्कृतियों के वै िवक एकीकरण का प्रतिनिधित्व करता है। वै वीकरण दुनिया भर में लोगों, कंपनियों और सरकारों की बीच बातचीत और एकीकरण की प्रक्रिया है। परिवहन और संचार प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण वै वीकरण बढ़ गया है। कुछ विद्वानों का मत है कि वै वीकरण का अर्थ विभिन्न दे ाों के बीच सीमाओं का बंधन न होना माना जाता है वै वीकरण के कई आयाम है जैसे आर्थिक, सूचनागत, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक इत्यादि।

- **वै वीकरण और भारत :**

विकसित दे ा व्यापार को उदार बनाने के लिए विकास ील दे ाों को आगे बढ़ाने की कोि ा ा कर रहे हैं और व्यापार नीतियों में अधिक लचीलापन की अनुमति देते हैं ताकि वे अपने घरेलू बाजार में बहुराश्ट्रीय कंपनियों को समान अवसर प्रदान कर सके। लिबरलाइजे ान (उदारवाद) ने नि िचत समय सीमा में इलेक्ट्रॉनिक सामानों पर उत्पाद भाुल्क में कटौती के माध्यम से भारत जैसे विकास ील दे ाों की बंजर भूमि पर अपना पैर पकड़ना भाुरू कर दिया है। भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर वै वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों रहे हैं। जहाँ भारतीय संस्कृति अपनी विविधता के लिए जानी जाती है। वहीं वर्तमान परिस्थितियों में इस विविधता का स्थान वे ताकतें ले रही हैं जो या तो उच्च प्रौद्योगिकी उपभोक्तावादी और यौनलुप्त संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है या तथाकथित 'जन संस्कृति' का इस संस्कृति में एक ओर धार्मिक सुधार–विरोध है तो दूसरी ओर हिंसा और सेक्स का खराब प्रद ान। आज संस्कृति से जुड़ी समस्याएं अत्यंत जटिल है। इन समस्याओं की परिधि भी वि ााल है अतः इनके प्रति बहुमुखी दृश्टिकोण अपनाएं बिना इन्हें समझना मु िकल है इस दृश्टिकोण का विकास तभी संभव है जब

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

संस्कृति के साथ अर्थ ाास्त्र इतिहास, प्रौद्योगिकी विज्ञान और राजनीति के संबंध स्थापित किए जाएं। जहाँ सांस्कृतिक विशयों के प्रति हमारी मौजूदा सोच विखंडित और एकतरफा है वहीं योजनाओं के साथ–साथ वैज्ञानिक और राजनीतिक कार्यकर्ता भी विकास के सांस्कृतिक आयाम की अनदेखी कर रहे हैं। दूसरी ओर सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं में संस्कृति के आर्थिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक आयाम की समझ नहीं है। अतः संस्कृति के प्रति एक ऐसा नया दृश्टिकोण विकसित किया जाना चाहिए जो संस्कृति–वि ोशज्ञों और इतिहास अर्थ ाास्त्र, विज्ञान तथा राजनीति के वि ोशज्ञों के बीच दूरी कम कर सके।

संस्कृति के सवाल की व्याख्या इतिहास के संदर्भ में करते हुए धूर्जटी प्रसाद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक मॉडर्न इंडियन कल्चर (1947) में जो अंतदृश्टि प्रस्तुत की है वह इस व्याख्या में काफी मददगार साबित होती है धूर्जटी ने भारत की सांस्कृतिक समस्या का जो वि लेशण किया है उससे दो महत्वपूर्ण बिदूं उभरते हैं वर्तमान संदर्भ में ये सामयिक है। धूर्जटी के मुताबिक आधुनिक भारतीय संस्कृति पर ऐतिहासिक भाक्तियों और प्रक्रियाओं का काफी प्रभाव पड़ा है इनमें पि चम की आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक भाक्तियाँ महत्वपूर्ण हैं धूर्जटी का मानना है कि सांस्कृतिक समस्या समेत आधुनिक भारत की सभी समस्याओं के कारण पि चम के सभी प्रभाव में निहित है। वहीं हिंद स्वराज के लेखक महात्मा गांधी जी ने भी रविन्द्रनाथ ठाकुर के साथ अपने संवाद में यह स्पश्ट कर दिया था कि वे पि चम समेत समस्त वि व की सांस्कृतिक बाजार के लिए भारत की खिड़कियां खुली रखना चाहते हैं लेकिन वे यह नहीं चाहते थे कि हवा के इस झौके में 'हमारे पैर उखड़ जाए' (मोहनदास करमचंद गांधी, एन0के0 बोस की पुस्तक से उद्धत,1957:298)।
गांधी ने पि चमी संस्कृति के अंधानुकरण का विरोध किया वे चाहते थे कि भारतवासी पि चमी संस्कृति की नवीनता को ग्रहण करें।

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

अपनी सभ्यता की वि ाष्टता (जीनियस) को बरकरार रखना ही मेरा स्वराज है। मैं अनेक नई बातें लिखना चाहता हूँ, लेकिन ये सब भारतीय तख्ती में ही लिखी जानी चाहिए। प ि चम की संस्कृति को उधारस्वरूप मैं सहर्श स्वीकार कर सकता हूँ। लेकिन सूद समेत वापस करने योग्य होने पर ही मैं यह उधार लूंगा।

– मोहनदास गांधी, यंग इंडिया, 26 जून 1924

- **भारतीय संस्कृति व प ि चमी संस्कृति के बीच अंतर –**

भारतीय संस्कृति व प ि चमी संस्कृति दोनों ही एक दूसरे के विपरीत हैं ठीक वैसे ही जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते हैं भारतीय संस्कृति रीति–रिवाजों पंरपराओं भाशा आदि में विविधताओं का मिश्रण है, जो दे ा के भीतर एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होती है। यह सबसे पुरानी और विभिन्न संस्कृतियों के संयोजन में से एक है दूसरी ओर प ि चमी संस्कृति, यह काफी उन्नत और खुली है मानदंड, वि वास, मूल्य, परंपरा, रीति–रिवाज और प्रथाएं यूरोपीय संस्कृति से बहुत प्रेरित है। इसके अलावा प ि चमी संस्कृति में ब्रिटि ा संस्कृति, फ्रांसीसी संस्कृति, स्पेनि ा संस्कृति भाामिल है। दोनों संस्कृतियों में कुछ खूबिया हैं तो कुछ अवगुण भी हैं।

तुलना के लिए आधार	**भारतीय संस्कृति**	**प ि चमी संस्कृति**
अर्थ	भारत में जिस संस्कृति का पालन किया जाता है वह भारतीय संस्कृति है।	सबसे अधिक प ि चमी दे ाों जैसे अमेरिका, स्पेन, कनाडा, यूरोप आदि में जिस संसकृति का पालन किया जाता है उसे प ि चमी संस्कृति के रूप में

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

		जाना जाता है।
धर्म	हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म	ईसाई धर्म, यहूदी धर्म।
परिवार	सयुंक्त परिवार	एकल परिवार
संगीत	भारतीय संस्कृति में फोक, क्लासिकल, सूफी, बॉलीवुड, संगीत को पंसद किया जाता है।	पि चमी संस्कृति में हिप–हॉप, जैज, ब्लूज, रैप, हैवी, मेटल, रॉक, संगीत की सराहना की जाती है।
समानता	स्त्री को पुरूश से ही माना जाता है, हॉलाकि पि चमीकरण के प्रभाव से सोच बदल रही है।	स्त्री और पुरूश दोनों को समान माना जाता है।
बोली	हिंदी अत्यधिक बोली जाने वाली भाशा है लेकिन कई अन्य भाशाएं हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाती है जैसे कि तेलगू, तमिल, मराठी, पंजाबी, बंगाली, बिहारी, उर्दू आदि।	अंग्रेजी पि चमी दे ाों में व्यापक रूप से बोली जाती है उसके बाद फ्रांसीसी और स्पेनि ा
परिवार के साथ संबंध	प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार के साथ घनिश्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, वे खुद से अधिक परिवार के बारे में सम्मान और देखभाल करते हैं।	व्यक्ति को अपने परिवार से ज्यादा लगाव नहीं होता है, वे 18 साल की उम्र तक अपने माता–पिता का घर छोड़ देते हैं।
समाज	भारत में लोग अपनी जरूरतों	वे खुले विचारों वाले होते हैं

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

	और इच्छाओं को मारते हैं वे पहले से मान लेते हैं कि समाज क्या सोचेगा।	और खुद को खु ा करने को प्राथमिकता देते हैं।
भाादियां	विवाहित विवाह को प्राथमिकता दी जाती है।	प्रेम विवाह आम है।
कपड़ा	पारंपरिक कपड़े क्षेत्र और धर्म पर निर्भर करते हैं।	एक व्यक्ति जो चाहे उसे पहन सकता है।

- **भारतीय समाज पर वै वीकरण के सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभावः**

  तलाक की दर दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। नमस्कार और नमस्ते के बावजूद लोगों को बधाई देने के लिए 'हाय', 'हैलो' का इस्तेमाल किया जाता है। वैलेटाइन्स दिवस जैसे अमेरिकी त्यौहार पूरे भारत में फैल रहे हैं।

- **ि ाक्षा तक पहुंचः**

  वै वीकरण ने वेब पर जानकारी के विस्फोट में सहायता की है जिसने लोगों के बीच अधिक जागरूकता में मदद की है। अंग्रेजी के माध्यम से लोगों के मध्य संपर्क बढ़ा है जहाँ भाहरी क्षेत्रों में अंग्रेजी के माध्यम से संपर्क बढ़ा है वही दूसरी तरफ ि ाक्षा में अंग्रेजी माध्यम गांव के लोगों के लिए अधिक जटिल विशय बन गया है।

- **भारतीय व्यंजन :**

  हमारे व्यंजन दुनिया भर में सबसे लोकप्रिय व्यंजनों में से एक है। ऐतिहासिक रूप से, भारतीय, मसालों और जड़ी बूटियों का व्यापार सबसे अधिक रहता है

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

और हमारे यहाँ पिज्जा, बर्गर और अन्य पि चमी खाद्य पदार्थ काफी लोकप्रिय हो गए हैं।

- **वस्त्रः**

  महिलाओं के लिए पारंपरिक भारतीय कपड़े साड़ी, सूट इत्यादि हैं और पुरूशों के लिए पारंपरिक कपड़े धोती, कुर्ता हैं । हिन्दू विवाहित महिलाओं ने लाल बिंदी और सिंदूर को भी सजाया है, लेकिन अब यह एक बाध्यता नहीं है। भारतीय लड़कियों के बीच जींस, टी– ार्ट, मिनी स्कर्ट पहनना आम हो गया है।

- **भारतीय प्रद ान कला :**

  भारत के संगीत में धार्मिक, लोक और भाास्त्रीय संगीत की किस्में भामिल हैं। भारतीय नृत्य के भी विविध लोक और भाास्त्रीय रूप हैं। भरतनाटयम, कथक, कथकली, मोहिनीअट्म, कुचीपुड़ी, ओडिसी भारत में लोकप्रिय नृत्य रूप हैं संक्षेप में कलारिपयहू या कालारी को दुनिया की सबसे पुरानी मा ल आर्ट माना जाता है। लेकिन हाल ही में, पि चमी संगीत भी हमारे दे ा में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। पि चमी संगीत के साथ भारतीय संगीत को फ्यूज करना संगीतकारों के बीच प्रोत्साहित किया जाता है। अधिक भारतीय नृत्य कार्यक्रम वि व स्तर पर आयोजित किए जाते हैं। भरतनाटयम् सीखने वालों की संख्या बढ़ रही है। भारतीय युवाओं के बीच जैज़, हिप हॉप, साल्सा, बैले जैसे पि चमी नृत्य रूप आम हो गए हैं।

- **वृद्धावस्था भेघता :**

  पि चम की तर्ज पर सयुंक्त परिवार का विघटन होता जा रहा है। श्रवण कुमार जैसे बेटों की धरती में, आज माँ–बाप को विवाहोपरांत बेटा–बहू वृद्धाश्रम का रास्ता दिखा देते हैं उनकी इस व्यवस्था को भाासन भी मुक्त हस्त प्रोत्साहित करती है। आज की इस व्यस्तम जिंदगी में माता–पिता के

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

पास बच्चों को पढ़ाने व संस्कार देने के लिए समय का अभाव है इसीलिए कम–से–कम हमारे बुजुर्ग बच्चों में वो संस्कार डाल सकते हैं जिन्हें हम भूल चुके हैं।

- **नारी का सम्मान :**

  भारतीय समाज में नारी को सम्मानीय स्थान दिया गया है माता, पत्नी, बहन सभी रूपों में उन्होंने अपना आद र्श प्रस्तुत किया है आज के इस सांस्कृतिक विघटन युग में स्त्रियों के प्रति अपराध भी बढ़े हैं जिसके लिए वे कुछ हद तक वे स्वयं उत्तरदायी हैं हम अपनी पूज्यनीय का सिर्फ चेहरा देखते हैं लेकिन आज इतना खुलापन आ चुका है स्त्री का गरिमा भाब्द इतिहास का विशय हो चुका है।

- **भाशा :**

  भाशा भी अब सांप्रदायिक हो गयी है। सामान्य बोलचाल की भाशा में हम आप जैसे सम्मान सूचक भाब्दों का उपयोग करना भी भूलते जा रहे हैं। अंग्रेज़ी में भाब्दों का प्रयोग फै ान बनता जा रहा है।

- **संगीत :**

  भारतीय संगीत जहाँ सदियों से लोकप्रिय रहा है जिसमें अलग–अलग त्यौहारों व ऋतुओं, परंपराओं को संगीत के माध्यम से प्रकट किया जाता है वही आज पि चमी संगीत युवा पीढ़ी अधिक लोकप्रिय देखा गया है भारत में आज लोकगीत लुप्त हो गये, जिसमें भारतीय सामाजिक जीवन स्थितियों को मार्मिक अभिव्यक्ति मिली थी, उन गीतों के रि ते गायब हो गये। हमारी कृशि व्यवस्था और कृशि संबंधों से जुड़े संस्कार गीतों में जिस दिन सिनेमा की

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

फूहड़ता प्रवे ा कर गई उसी दिन कृशि संस्कृतियां लोक संस्कृति नश्ट होने के मुहाने पर खड़ी हो गयी यही अपसंस्कृति उन्हें चबा गई।

- **योग आयुर्वेद :**

  योग व आयुर्वेद तो भारत में प्राचीन समय से विद्यमान रहा है योग व आयुर्वेद के ज्ञान व प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति अपने व दूसरों के भारीर को स्वस्थ रखते थे लेकिन वहीं योग व आयुर्वेद आज विलुप्त होता जा रहा है जिसका स्थान अब GYM व बड़े–बड़े व मंहगें अस्पतालों ने ले लिया है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि ये आज की आव यकताएं हैं लेकिन कुछ हद तक यह हमारी कमी भी है कि हमें भारतीय होने के बावजूद की योग व आयुर्वेद से संबंधित जड़ी–बुटियों का ज्ञान नहीं है जो हमारी अधिकतर बिमारियों को ठीक करने में मद्दगार हो सकती हैं।

- **इंटरनेट :**

  इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इंटरनेट के माध्यम से लोगों में ज्ञान, तकनीकी का विस्तार हुआ है लेकिन यह सोचने की बात है कितने व्यक्ति आज इस इंटरनेट का सही उपयोग करते हैं।

- **सांस्कृतिक प्रदूशणः**

  सरकार की संस्कृति की संस्कृति रक्षा की चिंता ने तमाम संस्कृति की संस्थाओं को जन्म दिया। संस्कृति के सरंक्षण व सजावट के नाम पर ये संस्थायें संस्कृति का व्यापार केन्द्र बन गई है। यहीं संस्कृति दिखाने की चीज बन गयी है, पे ा करने की चतुराई से उसे भाहराती बनाकर उसका व्यापार किया जाने लगा है इस संस्कृति के वि ोशज्ञ पैदा किये जाने लगे हैं। पूरी एक नकली संस्कृति लोक कलाओं के नाम पर पैदा की गई है। इसने वर्ग भेद को बढ़ावा दिया है। ऐसी संस्कृति ने प्रकारान्तर से साम्राज्यवादी भाक्तियों को हमारी संस्कृति में हस्तक्षेप करने का अवसर दिया है, इस रास्ते हमारी

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

भारतीय संस्कृति का विघटन हुआ। यह संस्कृति संपन्न लोगों के ड्राईंग रूम का संग्लन बन गई है। भारतीय संस्कृति नश्ट होती जा रही है संस्कृति को मन चाहा मोड़ देकर एक सांस्कृतिक प्रदूशण पैदा किया है, न ो की संस्कृति कैबरे व डिस्को की संस्कृति हिप्पी संस्कृति जैसी बिमारियाँ इस प्रदूशण का परिणाम है।

वै वीकरण से तात्पर्य वि व को एक सूत्र बांधने से है जहाँ सभी दे ा आपस में मिल–जुलकर भाई–चारे व भाांति से कार्य करें वहीं दे ा व दे ावासियों का कर्त्तव्य बनता है कि वह इस वै वीकरण के युग में उन्हीं रीति रिवाजों व चीजों को अपनाए जिससे उसकी व दे ा की एकता, अखण्डता व संस्कृति को कोई हानि न हो केवल सकारात्मक प्रभाव को अपनाया जाए व नकारात्मक प्रभाव का विरोध व अवरोध किया जाए जिससे हम अपने पूर्वजों से प्राप्त हमारी भारतीय संस्कृति व सभ्यता को इस आधुनीकरण व वै वीकरण के युग में नई ऊँचाईयों तक ले जाएं।

- **निश्कर्श :**

हम यह नहीं कह सकते हैं कि वै वीकरण का प्रभाव पूरी तरह से सकारात्मक या पूरी तरह से नकारात्मक रहा है। ऊपर वर्णित प्रत्येक प्रभाव को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि, यह चिंता का मुद्दा तब बन जाता है, जब भारतीय संस्कृति पर वै वीकरण का खराब प्रभाव देखा जाता है। प्रत्येक ि ाक्षित तथा ज्ञानी भारतीय मानता है कि भारत में, भूतकाल या वर्तमान में, बाहर से कुछ भी स्वीकृत नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि वह उचित प्राधिकारी द्वारा मान्यता प्राप्त और अनु ांसित न हो। भारत की समृद्ध संस्कृति और विविधता को संरक्षित रखने के लिए हर पहलू की पर्याप्त जांच की जानी चाहिए। इस प्रकार न तो पि चमी जगत की सभी नीतियां हमारे अनुकूल हैं और न ही

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 01
January 2019

वहां के कार्यक्रम हमें ऐसी नीतियों और कार्यक्रमों को अपनाना होगा जो हमारी आव यकताओं और हमारे परिवे ा के अनुरूप हों। अगर भारत पि चम की सिर्फ नकल करता है तो इससे भारत ही नहीं, वरन समूची मानव जाति को नुकसान होगा। भारत में पि चम से सिर्फ लेने की प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। इसे इतना सक्षम होना चाहिए कि बदले में पि चम को भी कुछ दे सके।

Biblography: संदर्भ सूची

- सिंह कुमार प्रदीप 'भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्य समाज, संस्कृति और भाशा' 2016 इलाहाबाद : सरस्वती प्रका ान, पृश्ठ 528।
- जो ाी पूरन 'संस्कृति विकास और संचार क्रांति बदलते परिप्रेक्ष्य'।
- अनुवादक – सुनील कुमार सिंह, ग्रंथ ि ाल्पी, प्रथम संस्करण 2001, पुनर्मुद्रण 2014।
- www.wikipedia.com.